पद्य के प्रदीप

मुनिश्री

पथ के प्रदीप

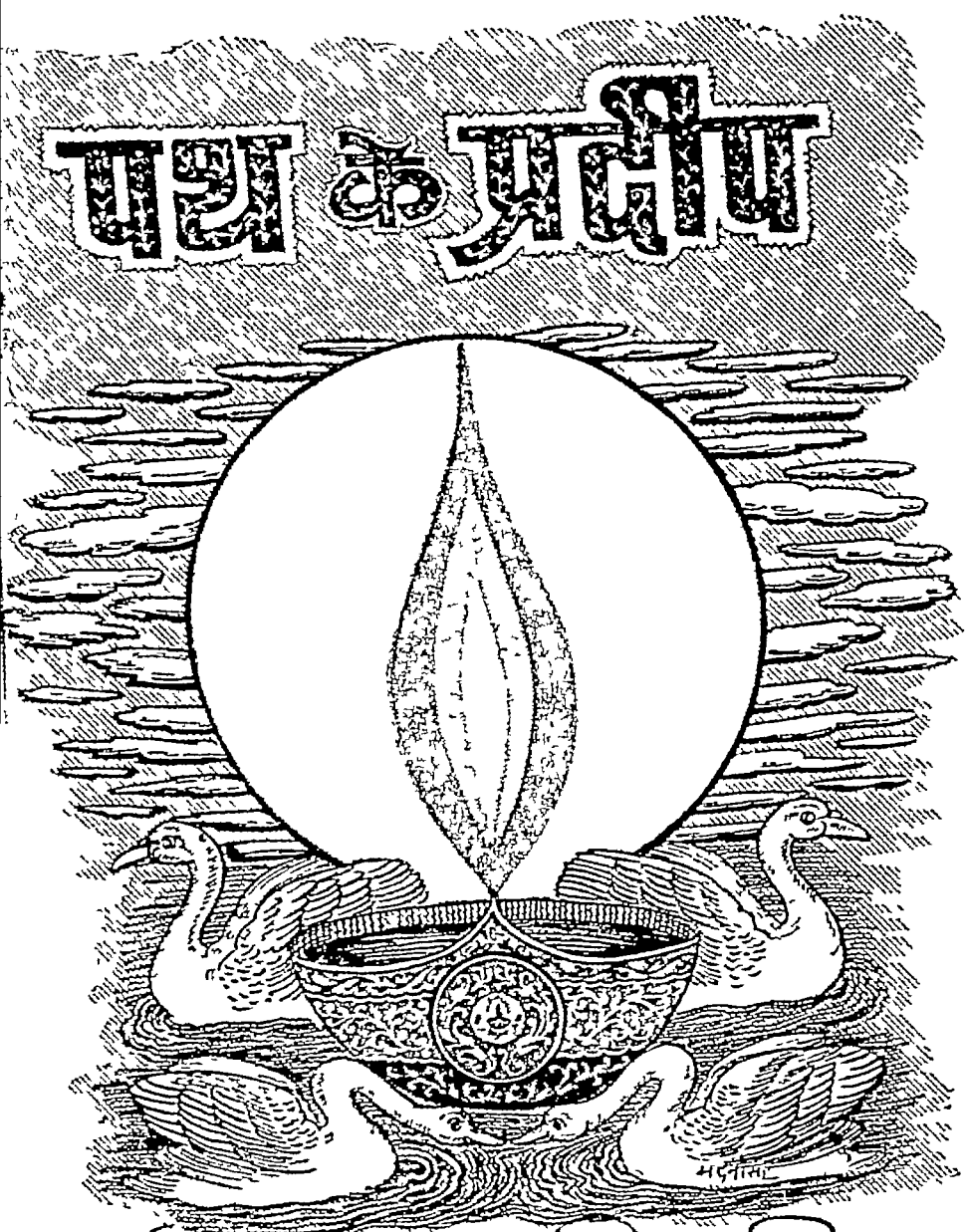

मुनिश्री भद्रगुप्त विजयजी

प्रकाशक

हीराचन्द वैद
पारसमल कटारिया

मानद मंत्री

श्री विश्वकल्याण प्रकाशन
आत्मानन्द सभा भवन
घीवालो का रास्ता,
जयपुर–३

वि० सं० २०२६, कार्तिक

मूल्य २ रुपये

प्रथमावृत्ति· १०००

मुद्रक:
अजन्ता प्रिन्टर्स, जौहरी बाजार,
जयपुर–३०२००३

श्री विश्वकल्याण प्रकाशन
(हिन्दी विभाग)
आत्मानन्द सभा भवन
घी वालों का रास्ता जयपुर–३ (राज०)
द्वारा प्रेम भेंट

लेखक

मुनिराज श्री भद्रगुप्तविजयजी

श्री विश्वकल्याण प्रकाशन, जयपुर की हिन्दी
साहित्य की पंचवर्षीय योजना के
अन्तर्गत पांचवे वर्ष का प्रथम पुष्प

पंच-वर्षीय योजना की १७वीं किताब

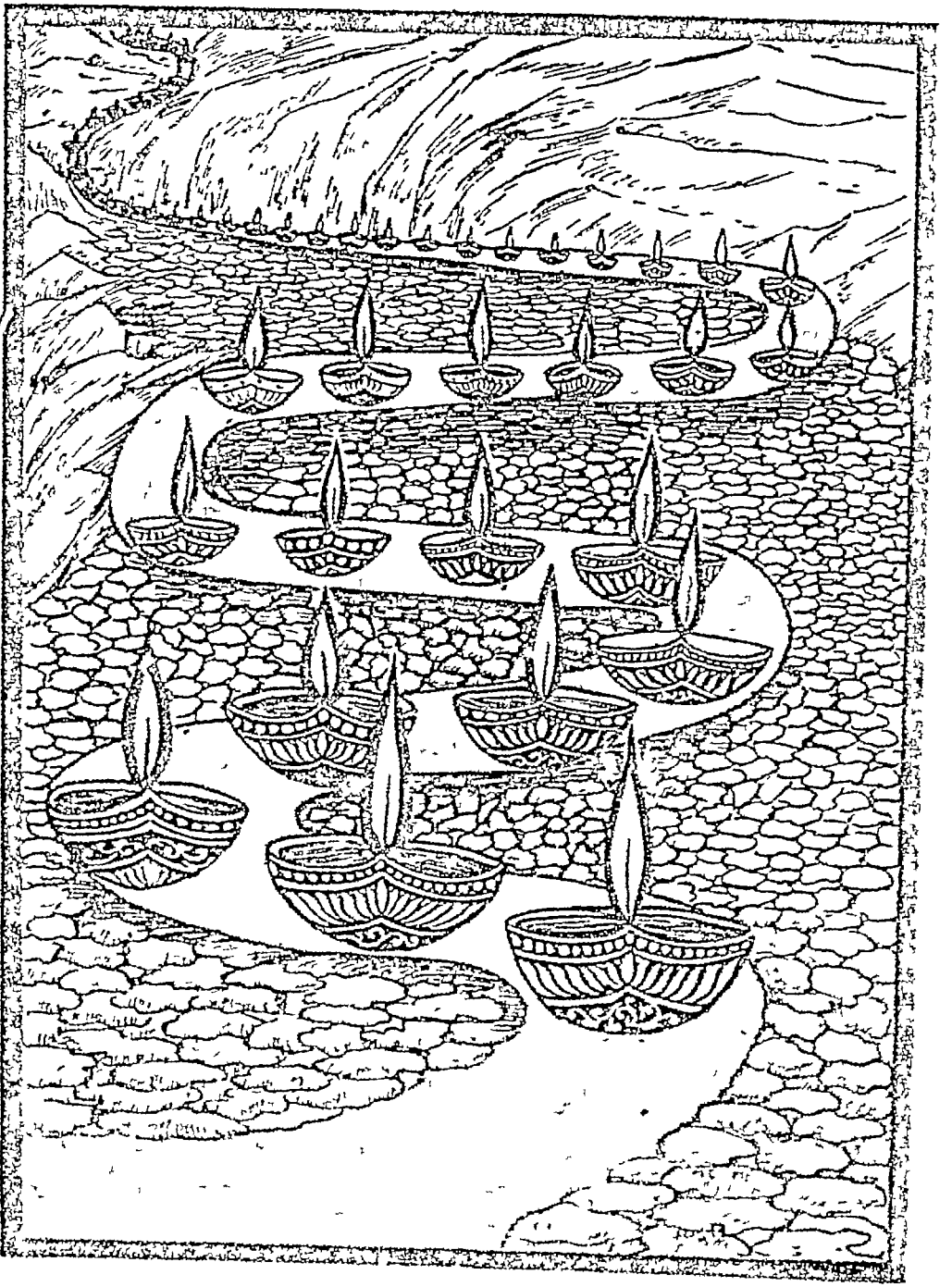

निवेदन

श्री विश्वकल्याण प्रकाशन–जयपुर की पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत यह १७वी पुस्तक है। संस्था के पास कोई रिजर्व फंड नही होते हुये भी शंखेश्वरपार्श्वनाथ भगवंत के अचिन्त्य प्रभाव से संस्था अपने पवित्र ध्येय की ओर अग्रसर होती जा रही है।

नये-नये सदस्य बनते जाते हैं और नयी-नयी पुस्तक प्रकाशित होती जा रही है। इस पुस्तक के पश्चात्

'अन्तरनाद'

प्रकाशित होगी। संभवत. इस किताब के साथ ही 'अन्तरनाद' आप को भेज देंगे।

निवेदक

मानद मंत्री

जयपुर

१–१–७३

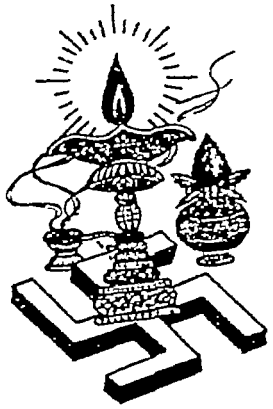

पथ के प्रदीप

यहां जीवनपथ को प्रकाशित करने वाले १०८ दीपक जलाये गये हैं। हाँ, मेरे जीवनपथ को तो प्रकाशित किया ही है····· "अब आपके पास ये १०८ प्रदीप आ रहे है·····मोह-अज्ञान और दुर्बुद्धि के घोर अधकार से व्याप्त जीवनपथ को प्रकाशित करना कितना आवश्यक है ? आप इन प्रदीपो को अपने जीवनमदिर मे स्थापित करे, जीवन-पथ पर स्थापित करे प्रदीपो के प्रकाश मे चलते रहे।

यह मेरा दैनिक चिन्तन है ! आत्मा का संवेदन है और शास्त्रो का मननीय मनन है। चिन्तन के स्पन्दनो को लिखता रहता हूँ···· मेरे मन को संतोष प्राप्त होता है—आपको आनन्द प्राप्त होगा।

मेरी 'डायरी' से सुदर प्रेसकोपी श्रीयुत **चन्दनमलजी लसोड़** [M A.] ने की है। वे धन्यवाद के पात्र हैं। श्री विश्वकल्याण प्रकाशन इस पुस्तक को प्रकाशित करता हुआ पंचमवर्ष मे प्रवेश करता है।